SWAMI VIVEKANANDA MAHILA MAHAVIDHYALAYA, ROOPANGARH

FACULTY NAME :	**SUMAN KUMARI**
COURSE :	**BA III YEAR**
PAPER :	**MODERN HISTORY**
SUBJECT :	**HISTORY**
UNIT :	**II**
SESSION NAME :	**THE REVOLT OF 1857**

शिक्षण उद्देश्य (TEACHING OBJECTIVE)

- विद्यार्थी 1857 की क्रांति के कारणों को जान सकेंगे |
- विद्यार्थी 1857 की क्रांति के प्रसार व परिणाम को जान सकेंगे |

1857 की क्रांति

- यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ संगठित प्रतिरोध की पहली अभिव्यक्ति थी।
- यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के सिपाहियों के विद्रोह के रूप में शुरू हुआ, लेकिन जनता की भागीदारी भी इसने हासिल कर ली।
- विद्रोह को कई नामों से जाना जाता है: सिपाही विद्रोह (ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा), भारतीय विद्रोह, महान विद्रोह (भारतीय इतिहासकारों द्वारा), 1857 का विद्रोह, भारतीय विद्रोह और स्वतंत्रता का पहला युद्ध (विनायक दामोदर सावरकर द्वारा)।

1857 के विद्रोह के कारण

- ‘सहायक संधि प्रणाली’ द्वारा भारतीय राज्यों पर नियंत्रण, ‘व्यपगत की नीति’ द्वारा भारतीय राज्यों को हड़पना प्रमुख राजनीतिक कारण रहे। व्यपगत नीति के तहत डलहौजी ने सातारा, जैतपुर, संभलपुर, बाघाट, उदयपुर, झांसी और नागपुर का अधिग्रहण किया था। इसी व्यवस्था के तहत लॉर्ड डलहौजी ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का राज्य भी हड़प लिया था।
- भारतीयों को प्रशासन में उच्च पदों से वंचित रखा जाना, भारतीयों के साथ निरंतर असमान बर्ताव करना आदि 1857 के विद्रोह के प्रमुख प्रशासनिक कारण थे।

1857 के विद्रोह के कारण

- तीनों भू राजस्व नीतियाँ स्थाई बंदोबस्त, रैयतवाड़ी बंदोबस्त और महालवाड़ी बंदोबस्त, निर्यात कर में वृद्धि, आयात कर में कमी, हस्तशिल्प उद्योगों का पतन, धन की निकासी आदि आर्थिक कारकों ने 1857 के विद्रोह की उत्पत्ति में भूमिका निभाई।
- इसाई मिशनरियों का भारत में प्रवेश, सती प्रथा का अंत, विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता, भारतीय सैनिकों को समुद्री यात्रा के लिए विवश करना 1857 के विद्रोह के प्रमुख सामाजिक-धार्मिक कारण थे।

1857 के विद्रोह के कारण

- भारतीय सैनिकों के साथ असमान व्यवहार, उच्च पदों पर नियुक्त करने से वंचित, यूरोपीय सैनिकों की तुलना में कम वेतन, डाकघर अधिनियम पारित नि:शुल्क डाक सेवा की समाप्ति आदि 1857 के विद्रोह के प्रमुख सैन्य कारण थे।
- 'चर्बी वाले कारतूस का मुद्दा' 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण बना।

1857 के विद्रोह का आरंभ और घटनाक्रम

- इतिहासकारों के अनुसार, 1857 के विद्रोह की योजना बिठूर में नाना साहब और अजीमुल्ला खां ने तैयार की थी। उनकी योजना के अनुसार, 31 मई, 1857 का क्रांति के लिए निश्चित किया गया था।
- ‘कमल’ और ‘रोटी’ को 1857 के विद्रोह के प्रतीक के रूप में चुना गया था।

1857 के विद्रोह का आरंभ और घटनाक्रम

- बैरकपुर छावनी के एक सिपाही मंगल पांडे ने 29 मार्च, 1857 को चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग करने से मना कर दिया और अपने दो अधिकारियों लेफ्टिनेंट जनरल ह्यूसन और लेफ्टिनेंट बाग की हत्या कर दी थी।
- 10 मई, 1857 को मेरठ छावनी की 20वीं नेटिव इन्फेंट्री में भी चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग करने से मना कर सशस्त्र विद्रोह किया। इसी के साथ 1857 का विद्रोह आरंभ हो गया।

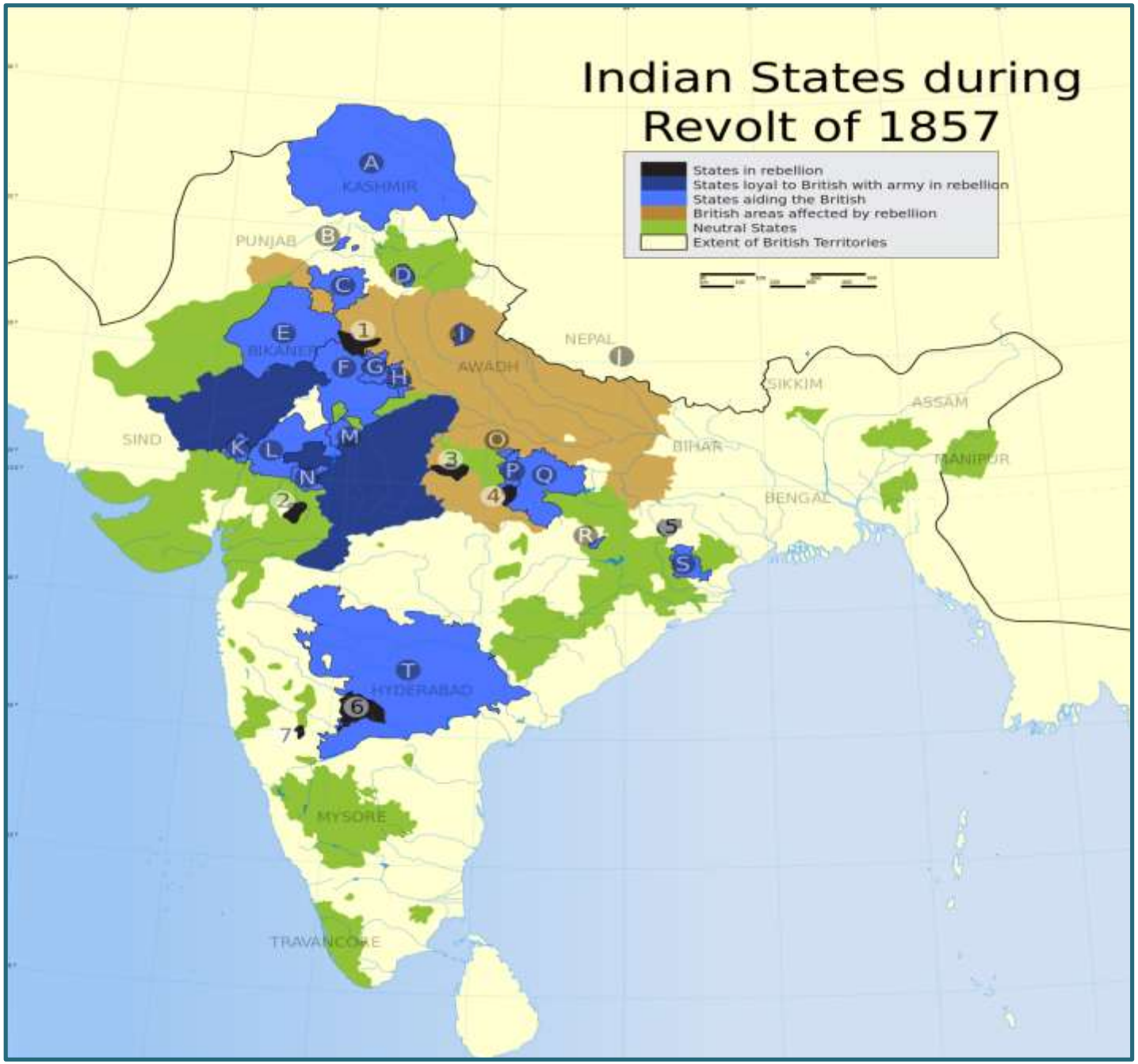
Indian States during Revolt of 1857
States in rebellion
States loyal to British with army in rebellion
States aiding the British
British areas affected by rebellion
Neutral States
Extent of British Territories
KASHMIR
PUNJAB
BIKANER
AWADH
NEPAL
SIKKIM
ASSAM
SIND
BIHAR
BENGAL
HYDERABAD
MYSORE
TRAVANCORE

1857 के विद्रोह की असफलता के कारण

- इस विद्रोह की कोई एक सुनियोजित योजना नहीं थी। अतः यह दिशाहीन हो गया।
- सुव्यवस्थित संगठन था और पर्याप्त संसाधन नहीं थे। विद्रोहियों के पास अंग्रेजों की तुलना में कम गुणवत्ता वाले हथियार थे।
- देशी शासक विद्रोह को कुचलने में अंग्रेजों की मदद कर रहे थे।

1857 के विद्रोह की असफलता के कारण

- भारतीय विद्रोहियों के पास तांत्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई जैसे कुछ ही बेहतर नेतृत्व मौजूद थे, लेकिन अंग्रेजों के पास निकोलस आउट्रम, हैवलॉक, हडसन जैसे एक से एक कुशल सैन्य नेतृत्व मौजूद थे।
- विद्रोहियों के पास कोई एक निश्चित राजनीतिक दृष्टि नहीं थी। निजी स्वार्थ के वशीभूत होकर युद्ध कर रहे थे।
- इसके अलावा, भारतीय पक्ष की तरफ विभिन्न गद्दार व्यक्ति भी मौजूद थे, जिन्होंने भारत के कुशल नेताओं की सूचना अंग्रेजों को दी थी।

1857 के विद्रोह के परिणाम

- इसके बाद भारत में से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर दिया गया था और ब्रिटिश ताज ने भारत का शासन सीधे अपने हाथ में ले लिया था।
- इस विद्रोह के पश्चात् कंपनी पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए गठित किए गए 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' तथा 'कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स' नामक दोनों संस्थाओं को समाप्त कर दिया गया था तथा इनके स्थान पर एक भारत सचिव तथा उसकी 15 सदस्य इंडिया काउंसिल की स्थापना की गई थी। यह भारत सचिव ब्रिटिश सरकार का भारत संबंधी मामले देखने वाला एक मंत्री होता था।

1857 के विद्रोह के परिणाम

- इस विद्रोह के बाद ब्रिटिश शासन ने भारत में साम्राज्य विस्तार करने की नीति का त्याग कर दिया था तथा लोगों के सामाजिक और धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करने की नीति अपनाई थी।
- इस विद्रोह के बाद ब्रिटिश सरकार के द्वारा भारतीय सेना के पुनर्गठन के लिए एक 'पील आयोग' गठित किया गया था। इस आयोग ने ब्रिटिश सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपी थी। उस रिपोर्ट के आधार पर भारतीय सेना में भारतीय सैनिकों की तुलना में यूरोपीय सैनिकों का अनुपात बढ़ा दिया गया था।

1857 के विद्रोह के परिणाम

- 1857 के विद्रोह के पश्चात् एक 'रॉयल आयोग' का गठन भी किया गया था। इस आयोग ने ब्रिटिश सरकार को सिफारिश की थी कि भारतीय सेना में अब जाति, समुदाय और धर्म इत्यादि के आधार पर रेजिमेंटों का गठन किया जाना चाहिए और इसका अनुसरण करते हुए ब्रिटिश सरकार ने यही नीति अपनाई। इस नीति का मूल उद्देश्य भारतीय समाज को विभाजित करना था तथा उन पर अपने शासन को निरंतर बनाए रखना था। ब्रिटिश सरकार की ऐसी ही नीतियों को 'फूट डालो और राज करो की नीति' कहा जाता है।

THANK YOU